आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 4/दिसंबर 2022
Received:17/12/2022; Published:24/12/2022

माँ

- अनीता.पी

सबसे प्यारी, न्यारी मेरी मां,
सबसे सुंदर, निराली मेरी मां,
हर धर्म, जाति के लोग रहते,
कभी न किया भेदभाव,
अपनाया हर किसी को दिल से,
ममता न्योछावर की सब पर एक,
माना कि गणित की कच्ची है,
भावों से पूरित है मां भारती,
न आने देंगे आंच इन पर कभी,
आंख उठायेगा मां पर कोई भी
नोच लेंगे आंखे उसकी,
पास नहीं आने देंगे दुश्मनों को,
नहीं शिकन आने देंगे चेहरे पर
जब भी देखा मां को मुस्काते
पाया भाई व बहन के साथ,
अपनी ही दुनिया में खोई सी,
एक अनजान सुलभ दुनिया,
आज तेरे बच्चे खड़े है माँ,
न आंसू का कतरा बहने देंगे,
रक्षा हम करेंगे नादान मां की,
अजीब है तेरी संस्कृति,
अरे ! क्यों मनाते हो,
एक दिन मात्र मां का,
हर दिन मां की गोद में

खेलते हुए महफूस व प्रसन्न है,
जन्म से लेकर मौत तक,
निभाते है माँ का साथ,
बावजूद अनेक समस्या के
रहते सदा साथ मिलकर,
जन्म लिया धरती पर,
हमें मात्र चुकाना है ऋण ,
मत भूलो मां के संसार में,
वीर औ' क्षत्राणी ने है लिया जन्म
मां तक गंदी हवा का
झोंका भी न आने देंगे,
जब तक यह सांसे चलेंगी,
लडेंगे हम मां के लिए,
सर पर चढाकर धूलि
मां के चरणों की कहो...
वंदेमातरम्, वंदेमातरम्
नारे लगाओ.....
जय हिन्द जय हिन्द
आज मार भगाना है शत्रु को,
देखो, कभी भी मेरी मां के
आंचल मे दाग नही लगने देंगे,
मेरी मां में इतनी ममता भरी है
दुश्मन भी विवश हो जाएंगे,
वे भी घुटने टेक देंगे,
प्यारी, सुंदर मेरी मां।

****